1. Acc. No. :→ 50529. सुन्दर सिंगार। सुन्दर कवि कृत।
2. Acc. No. :→ 50530. नामदेव जी की परिचई
3. Acc. No. :→ 50531. तिलोचन जी की परिचई। अनन्तदास कृत।
4. Acc. No. :→ 50532. अंगद जी की परिचई। अनन्तदास कृत।
5. Acc. No. :→ 50533. अंगद जी की परिचई by- अनन्तदास। प्रह्लाद लीला।
6. Acc. No. :→ 50534. कबीर के दोहे।
7. Acc. No. :→ 50535. शकुनावली।
8. Acc. No. :→ 50536. सुखदेव लीला।
9. Acc. No. :→ 50537. ध्रुव चरित्र।
10. Acc. No. :→ 50538. कलजुग पचीसी
11. Acc. No. :→ 50529. सुन्दर सिंगार। सुन्दर कवि कृत।

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जोसकी काल लड होय जाहाल गा
दु जाहा लाला लहोल्ह दु अनीरतीबकी

कीरति कही ॥ आगे ओर सुनाय ॥

इति श्री तिलोचन की परचई संपूर्ण समाप्तं ॥ अथ अंगद जी की परचई लिष्यते ॥ अंगद जी की परचई ॥ सुणी योसाध सुजांन ॥ दास बनें तनिरूपिहै ॥ ज्यो सुष पावै प्रान १ ॥ अंगद जी की परचई ॥ कीन्ही दास अनंत ॥ लो गभर मनहीजांन हीरीझिरहे सब संत ॥ २ ॥ राइसेन गढ उतम थांना ॥ जहां सल्लहदी है परधांना ॥ ताकौ का का अंगद लागे

अंगदजी की परचई

Acc. No: → 50532

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हरसन ताके पातिग जाजे ॥३॥ सबसु
बनू गतै चगति नजानै ॥ काहुको
परमो धनमानै ॥ ताको जसहू नी
कैगाउ ॥ जोरघुपति की आगपापा
उ ॥४॥ नारी तीन तासकि ग्रहनी ॥ जा
नमै ऐकसी लमनहरनी ॥ सूपव
ति गुणकी अधिकारी ॥ मीठोम
धुरो बोलन हारी ॥५॥ सोतो नई
रामकी दासी ॥ अंगदमूढ बहोत
करि त्रासी ॥ ऐकही नासी कारतें
आये ॥ गुरमंदिर मै बैठे पाये ॥६॥

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हरिकी कथा कहत है मीठी ॥ अंगर
नारी प्रेम स्यो दीठी ॥ इतवत चितवै
नैन चढावै ॥ अंगर के मनि सुन
नावै ॥ ७ ॥ त्रिया जाति जुठि की बु
धी ॥ नरक सुरग की लहै न सुधी
ताहि कहा परमोधै सांमी ॥ सदा का
स्वधसदाही कांमी ॥ ८ ॥ इनको मन
क्यौ होइ उदासु ॥ जबतब करै पा
न कौ नासु ॥ इतनी सुनि सांमी घ
रि जाई ॥ का मरिारु डी अंननोति
बाई ॥ ९ ॥ औसी उपाजै रही है जीकै ॥

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

अब की बेर मरौ तो नाकै ॥ दिना च्या
रि नयो जोजन न छाडैं ॥ सुदर निह
चै मर नै मा डैं ॥ १० ॥ पै ज पछैडी
होय न मेरी ॥ नातर मरौं दुहाइ त्ते
री ॥ अंगर कै जियताला बेली ॥
अब हु करो कौन सै पा केली ॥ ११ ॥
परसै पाय करै मनो हारी ॥ अब
हू कछु कहु नही नारी ॥ बारबार
सुदरि समझाई ॥ हरि की भगत क
रो मन लाई ॥ १२ ॥ सुंदरि कहै मो
हि जै चाहो ॥ तुम हु भगत करौ नी

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रवाहे॥कुंठिरे हि गर्बनकी जै॥ह
म तुम रामराम केहली जे॥१३॥क
लिमैस हानजीवे कोई॥हरिबिन
जनम जनम दुख होइ॥अंगहसी
षनारि की मानी॥काम लबाधि चे
त्यो अभि मानी॥१४॥गीरके दरब
सिब न फल बांछि॥नाह घंर जा
रै घट माही॥ग्यानी गुनी सुरक
बिपंडीत॥नारी केरे जीन को धैमैं
पंडीत॥षटदरसन को संग न छा
डे॥सोइ सा ग धरे आर नाडै॥म

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

ताबलीराजाजोहोइ॥ जाकेबसिब
सुधासबकोइ॥१६॥ कठीनमेंवास
तेउजाइ॥ नारीआगेकछुनब
साई॥ नारीसबकूंनाचननचा
वै॥ हरिसुमिरनबिनकौनबचा
वै॥ नलीबुरीजैसीसुतिठनै॥
कोइनारीनरकीपडावै॥ कोइह
रिकीभगतीकरावै॥१८॥ अंगर
कीअरधंगिनीकी॥ जीनरइछा
करीअपनापीकी॥ नरकजात
बैकुंठिपठायो॥ बहुरिनजुगती
संकटआयो॥१९॥ कामनिकंत

लीयोसमजाइ ॥ हरिकीभगती
करेमनलाइ ॥ अंगदकैमनीउ
पज्योग्यानु ॥ हरिसुमिरनसैपाला
ग्यौधानु ॥ २० ॥ अक्रमधाओदधा
लीनीसाची भगतिरामकीकीनी ॥
निरगुणपदपावैत्यौलावै ॥ तन
मनइंद्रिसुषबिसरावै ॥ २१ ॥ दो
हा ॥ जीहिनारीजुगमाहीयो ॥
हरिस्यौअंतरकिनु ॥ जौहिअंग
दनीरनैकीयौ ॥ करतासबसुष
दीनु ॥ २२ ॥ साहीबतादरमाडुधा

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सौ॥ जीतै कोइ नराजा रासौ॥ नितउ
ठ दौडी करै चहुदेसा॥ कोइ न्हागै को
इ मिलै नरेसा॥२२॥ देस सलै रही
कौ जीही मासौ॥ ऊऊतबे लबहाद
रहासौ॥ दौडी सलैदहिपा छैल्लागे
गठतै उतरि बहादर न्हागे॥२३॥ दे
डि सलै हदी डेरा लुटेयौ॥ कटकब
बहादर कौ सब कुटैयौ॥ अंगदपा
इ सिर किरो पी॥ पतिका उपरि
सी रहा नै लो पी॥२४॥ इको तर सै
ही रालागे॥ तीस बैरागस्यो [illegible]मा
गे॥ एकसर रस सबहीपरि राजे॥ ब

होत मोलकौ हीपग लाजै ॥२५॥ ह
रिकौ अरचि राखियौ सोई ॥ मागै मो
लि न देहू कोइ ॥ जबहम जगंनां
थकौ जै है ॥ तब लै याकी नेट करै
है ॥२६॥ और सब षरचे ज्यौ जांनै ॥
कछु कौ हू कछु मोली बीकानै
बहै तद्यौ सगरै है बीती ॥ करी
सलै हदी मन परतीति ॥२७॥ पाछै
बहौरि सलै हदि आयौ ॥ प्रगट ही
रा सो धोपायौ ॥ अगर हीरा हम
कौ देहु ॥ जैतौ मोल कहै सो लेहू ॥

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

२८॥ करनवसीठी जाटपठायौ॥ ब
हूतवेरइतउतफिरिआयौ॥ अंगद
कहैकहासोदीजे॥ नगनाहीमा
रीकेकीजै॥ २९॥ हीराकहादेस
मैथोरे॥ सवलेगयेमहाजनमो
रे॥ हरिकोअरपीराषीयासोइ
३०॥ कहैजाटअैसीक्योकीजे॥ जू
ठनगीजगननायककोदीजे॥ सोम
लेछमाथेपरराषि॥ ३१॥ अंगद
बोलेहरिहितजानै॥ जावनग
तिकीपुजामानै॥ चंदनआन्यौ
रासिबलादी॥ हरिकौचढन

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

घोजैा आही ॥३२॥ मालनि फुल
सी सघरि ल्यावै ॥ पंडौ ले हरिकौ
पहरावै ॥ कहै नार मेरि मतिकी
जै ॥ हीरा सलहा बीरकौ दीजै ॥
३३॥ जगंनाथ है ठाकुर मोटौ
वाकै कौण बसत कौ टोटौ ॥ स
ब ही लोग फुल फल ल्यावै ॥ तु
मसे जगतासबै कहावै ॥३४॥
जौ आपनौ मन सांचा होई ॥ स
ब ही हीरा नहु जौ कोइ ॥ कलप
त हीरा नराघी रे काउ ॥ घर घर

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

सबै मीरंजन राउ ॥ ३५ ॥ अति हठ
कीया चलि मति नाही ॥ वा ढैके को
घबैर मन माही ॥ इतनै सुनै ब
सिठ केबैना ॥ अंगद की यै कथा
यै नैना ॥ ३६ ॥ औसी नगति न ह
मकैं आवै ॥ मारे मोहि सो ही रा
पावै ॥ इतनी सुनत नाट घरि
जाई ॥ बहुरिन को उवा तचला
इ ॥ ३७ ॥ च्यंता करै सलै हदी ना
री ॥ कछु नराची बात हमारी ॥
मैनही मन सोचै दुषमानै ॥ अं
तर पीकन जानै को ३ ॥ ३८ ॥ दोहा ॥

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

स्वारथ लागी रतो रिये ॥ सबकु
रु की कानि ॥ पापन सु कै पंथ जु मै
होइ धर्मकी हानि ॥ ३९ ॥ बोहूरि स
लै हदी मतो विचारै ॥ छलबलक
रि अंगरक्षु मारै ॥ करि परपंच
बहुत बिधरे हूं ॥ औ ज्यावै त्यों ता
रा लै ॥ ४० ॥ भोजन करै बहुन के ता
या ॥ अरनों सो जजी वा वै साया
सेवा इरजा पाकर सोई ॥ सो सब बहु
त्यि बाहन कै होई ॥ ४१ ॥ अपने मं
दिर लै इबुलाइ ॥ कुफी बात कहू
समझायो ॥ पाखे गाव मैं दी रूतो

ही॥ जब लग मीच न आवै मोही
४१॥ इतनौ करौ हमारौ काजू
अंगद कौ विषही जे आनु॥ सा
लन स हत न जानै मरमु॥ का
हु पापन कौ हु धरम॥ ४२॥ इतनौ
सुनि रहे अरगाइ॥ हूनहारी
क्यौ मेटौ जाइ॥ सुनु सुपो कप
ज्ञारी न्यौ॥ बौहत जाति करि म
न हरि लीनौ॥ ४३॥ वो छि मति औ
रति कौ आवे॥ चीया गया मक
हाते पावे॥ काहु मारत क नैन

बारा॥जाइ नर तार मी त्रिपि पारा
४४॥ ईतनि सी घमानि घरि जाइ
पीछा तैबी षरीया पठाइ॥ बहूप
रकारी राचि ज्यौ सां रा॥ बाटी बा
रि स बही मै डारा॥४५॥ अंगर
वैस्यो चोगलगाइ॥ बेटी षेन
डुरप ठाइ॥ आनी वेगि बाल
कि बेटी॥ कहून पाइ संग लै हेरी
४६॥ विन जो नै जन जिवै आज
संज्या परी सी रानी नाजु॥ बहुन
की सांनी रोवन लागी॥ यो बोलै

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

हूजइअनागी ॥४७॥ मेरोमतौ
सुक्रतसबनास्यौ ॥ बकुरिबहै
नपाखंडपरकास्यौ ॥ मैअना
गनीकपटमतिकीन्हौ ॥४८॥ स
बजौरागरमाहीबीषसांन्यौ ॥
अंगदमरनतुम्हारैठांन्यौ ॥ अ
बजिनियाकौकरौअहार ॥ बि
षषायअबहीमरिजाहु ॥ ताते
मैनासोजनआइ ॥ इतनीसुनी
अंगदहीपराया ॥ अतिनिहसं
कोइभोजनकरीया ॥४९॥ च्या

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

रिपहेर किरत न कीया ॥ नीरनै
नपापर न सुख लीया ॥ हरि की
सरन कोटि बिघ नाजै ॥ जन कुं
जहर कहा ते लागै ॥ ५१ ॥ बेद ना
गैत बोहै ने साषी ॥ हरि सुमिरन
तै सब की राषी ॥ सब संसार बैर
ज्यो करइ ॥ तो जगत न काहू मा
रे मरइ ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ जो जन
निरबैरी रहै ॥ सकहि ताहि को
मारी ॥ आदि अंति रछ्या करै ॥
अपने हाथि मुरारी ॥ ५३ ॥ अंग
द रुघी चल्यो चढी घोरै ॥ क्यो हु

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

नरहैबहुतनीहोरै॥बाम्हराबेक
मनावनधायाया॥सौधोबहुरि
सलैहैदीपाया॥५४॥क्रोधवजयो
कासवारपठाये॥पकरौबेगीजा
ननहिपावै॥बरबटकीरालीजे
छीनी॥अरमारनकीआगपादी
नी॥५५॥इतनीसुनिधायेअसवा
रा॥अंगदघेरयौलगीनबारा
हीरादेहुसलैहदीमांगे॥बली
लैगयेकहातुजागै॥५६॥बैस
नेरीकीठाढेतारा॥अंगदजल
मैआसोहीरा॥औउँपांनीपरीयो

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जाइ॥ आप सत्लै हरीपौ हू च्यौजा
इ॥५७॥ लै न तहां जा वर पै सारे॥ पा
यो नही बहौ तप चितारे॥ अंगद ग
यो पराये देसा॥ घर अपने आये
नेरेसा॥५८॥ हा रा जगंनाथ लै
गये उ॥ नाभिराव परगट नये
उ॥ परसो तम पंडा सम जायो॥ अ
गरही राजेर चकायो॥५९॥ राव
सेन गठ छ अवासु॥ अंगर नाम
हमारो रासु॥ वेगी बुलावो ग
हरनलावो॥ सासो काजे दरस
नपावो॥६०॥ तब पंडा जगंनाथ

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

पठाई॥ मास्य उसरै अंगद पै आ
ऐ॥ पंडा बात कही समझाई॥ अंग
द हरख्यो परसे पाइ॥ ६१॥ चल्यो
गुसाइ बिलम न कीजे॥ सब का
हू को दरसन दीजे॥ साध बाट तु
म्हारी चाहै॥ जगंनाथ जी आ
प सराहै॥ ६२॥ दीन रत्न करी पं
डा की सारा॥ अंगद चल्या न ला
गी बारा॥ औरे यो रंकि पोपया
नै॥ पूछे जगंनाथ के पांनु॥
६३॥ दरसन पावै परसै पाई॥ हसी
हसी नैटेत्रि भवन राइ॥ तै ही रा
आरसौ जल माही॥ मैं कर पर ल्यो

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

बुडौ गौ नाही॥६४॥ पहु देषो नारि
परिरा जै॥ करै उजा स अधारो
ना जै॥ सुर नर मुनि जन कौ ति
ग आवै॥ जगती बहूं नै नेदन
पावै॥६५॥ मेरै हेति देत है कोइ॥
जाको दीन दीन हू नौ होइ॥ कर
क अली तौ उडै राजा॥ चोर मू
से मरि जाय अकाजा॥६६॥ पा
चौ उंउ सहै नर नारी॥ धरम उ
उ कौ सहै सहारी॥ आतमा जा
नि अनाथ पै दीजै॥ दीन दु खी
मो पै चन रली जे॥६७॥ मुरीद मर

मन जानै कोइ ॥ जहा बोवै तहा
कछु न होइ ॥ अंगद रापो (अ)
पनै पासा ॥ सुन्यो सकल हरी म
यो उदासा ॥ ६८ ॥ मै कपु(र) तमति
नेलो कीन्ही ॥ कीन्है कपट दि
नाइ दीन्ही ॥ मन बिलषानो
करै बिलापा ॥ मै कित कीन्है
उर धु पापा ॥ ६९ ॥ जउ ना थ जे
को पै आजू ॥ तो मिटी जाइ स
गलो राजू ॥ इतनी कही एक ज
न तप ठायो ॥ पायन चलि अंग
द पै आयो ॥ ७० ॥ पाच गावलि

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

षिदानकताही ॥ काकापुजावै
ठोषाही ॥ अंगदकौसोपीपता
मनसुषभयौसीरानीछाती
७१॥ बरसएकहोइदरसनपावै
उ॥ पीछैबहुरिदेसमैआउ॥ इ
तनीसुनतजगतघरीजाइ॥
उरपीसतैहृदीमनमैरमाइ
॥ दोहा॥ ७२॥ अंगदजीकोज
सकैहो॥ हूंअपनैउनमान॥
दासअनंतनिसपैहैपावैप
दनिरबान॥ इति श्री अंगद

Digitized by Panjab Digital Library | www.panjabdigilib.org

जीकी पर चइ संपूर्ण समाप्तं
लीषतं ब्यास गेगराज लीषी
पठनार्थं लाला गंगादास ॥ श्री
बाचै सुनै ताको राम राम ॥
संबत् १८२७ मीती आसोज बदी ९ शुकरबार ॥ श्री रस्तु ॥ श्री
साहजहांपुर का बासी ॥ पोथी लि
लीषी जाबते गंज मे ॥ श्री राम

श्री [illegible]
[illegible] राजतेन
[illegible] पु श्री राम [illegible] पक

जयरामलिनी